नैतिक प्रत्यय : कर्तव्य (Duty)

कर्तव्य एक प्रकार की नैतिक जिम्मेवारी है, जिसे सँभालने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को तैयार रहना चाहिए। कर्तव्य की बाध्यता कोई बाह्य वस्तु नहीं है। भय या दंड के त्रास से कोई कर्तव्य नहीं किया जाता। जब हम किसी कर्म को सत् समझते हैं तब उसे करना हमारा कर्तव्य हो जाता है। जब हम किसी कर्म को असत् समझते हैं तब उसका त्याग भी हमारा कर्तव्य हो जाता है। सत् का पालन कर्तव्य है और असत् का पालन अकर्तव्य।

कर्तव्य नैतिक बाध्यता है। कर्तव्य मनुष्य को अन्य प्राणियों से पृथक करता है। नैतिक नियमों का नियमित रूप से पालन ही कर्तव्य है। कर्तव्य सद्‌गुणों (जैसे - विवेक, सच्चरित्रता आदि) को जन्म देता है। कर्तव्यपरायण व्यक्ति महान चरित्रवाला और अनुकरणीय है। कर्तव्यविमुख व्यक्ति चरित्रहीन एवं निंदनीय समझा जाता है।

कर्तव्य मनुष्य के अंतर्गत वासना और विवेक के मध्य होनेवाले द्वन्द्व का सूचक

है। वासना मनुष्य को उचित या अनुचित का विचार छोड़कर कर्म करने की सलाह देती है। किन्तु विवेक या बुद्धि का मुख्य काम व्यक्ति को उचित- अनुचित का अंतर बताना है। विवेक हमें उचित काम करने और अनुचित कर्म के त्याग की सलाह देता है। जब व्यक्ति के अंदर वासना और बुद्धि के बीच संघर्ष या द्वन्द्व छिड़ता है, तब वह उचित कर्म करने की बाध्यता अनुभव करता है। यह उचित कर्म नैतिकता के नियम के अनुकूल है यही कर्तव्य है। कर्तव्य एक प्रकार का नैतिक ऋण है जिसे चुकाना प्रत्येक व्यक्ति का धर्म हो जाता है।

कभी-कभी कई कर्तव्यों के एक साथ होने पर उनमें विरोध दिख पड़ते हैं। उदाहरणार्थ यदि किसी व्यक्ति के यहां भागता हुआ एक निर्दोष बालक छिप जाता है और उसका पीछा करनेवाले बदमाश उस बालक के विषय में पूछते हैं, तो उस व्यक्ति के अंदर एक प्रकार का कर्तव्यसंघर्ष छिड़ जाता है।